उपसर्गजयी

धर्मात्मा

📒प्रतियोगिता के Rules कुछ इस प्रकार हैं।

🖋जिसमें आपकी स्क्रीन पर एक पंक्ति दिखेगी।
🖋उस पंक्ति को देखकर आपको Answer बताना है।
🖋तीनों ही Round same होंगे।
🖋Round 1: उपसर्गजयी महामुनिराज।
🖋Round 2: उपसर्गजयी महापुरुष।
🖋Round 3: उपसर्गजयी सतियाँ।
🖋hand raise (✋) के माध्यम से आपको Answer देना है।

Round 1

उपसर्गजयी

महा मुनिराज

देखो मुनिवर के शिर ऊपर,
विप्र अगनि बहु बारि।
शीश जलै जिमी लकड़ी तिनकौ,
तो भी नाहिं चिंगारी ।।

गज कुमार महामुनि

धन्य मुनिवर जिनके तन में,
क्षुधा वेद ना आई।
ता दु:ख में मुनि नेक न डिगियो,
चिंत्यौ निजगुण भाई।।

आचार्य समन्त भद्र

धन्य धन्य निर्ग्रन्थ महामुनी,
कैसे धीरज धारी।
एक श्यालनी जुग बच्चाजुत
पाँव भख्यो दुःखकारी।।

सुकुमाल महामुनि

धन्य धन्य मुनीश्वर स्वामी ,
व्याघ्री ने तन खायो।
तो भी श्री मुनि नेक डिगे नहीं,
आतम सो हित लायो।।

सुकौशल महामुनि

धन्य धन्य मुनि जिनके तन में,
कुष्ट वेदना व्यापी।
छिन्न भिन्न तन तासो हूवो,
तब चिंत्यो गुण आपी ।।

सनत कुमार मुनिराज

Round 2

उपसर्गजयी

महा पुरुष

दोष अनेकों लगा दिये,
फिर भी धर्म से नहीं डिगे ।
राजा के आदेश से ,
हाथी से मरवा दिये ।।

पण्डित टोडरमल जी

रानी ने दोष लगाया,
फिर भी वे मौंन थे।
शील को नाहीं छोड़ा,
सूली पर चढ़ते देखें।।

सेठ सुदर्शन

शेर अधिक भूखा था फिर भी ,
तनिक मांस का नहीं दिया ।
शुद्ध जलेबी देकर उसको,
स्वयं न प्राण का लोभ किया।।

दीवानअमरचंद जी

पूर्व जन्म में बालकपन में मुनि को अहार कराया था,
जिसके फल में इस जन्म में अपार वैभव पाया था।
पर इक पाप उदय भी भारी खुदके भाई चिडते थे,
इस इर्ष्या के कारण उसको मारने के प्रयत्न करें।।

धन्य कुमार

समयसार को प्राप्त कर,
सत्य धर्म को जान ।
परिस्थितियां आने पर भी,
सत्य धर्म को ना छोड़ा ।।

पूज्य गुरुदेव श्री कांजी स्वामी

Round 3

उपसर्गजयी

सतियाँ

कलंक लगा जिनके सिर पर,
मात्र प्रजा के कहने से।
जंगल में छुड़वाया था,
तीर्थ यात्रा बहाने से।।

सती सीता

केश मुडाये क्रोध में ,
कारागृह में डाल दिया।
फिर भी धर्म को ना छोड़ा,
वीर मुनि को आहार दिया।।

सती चंदनबाला

घने जंगलों में रहीं ,
फिर भी धर्म से प्रीत थी।
प्राणों की कीमत देकर भी,
अजगर को जीवित रखा।।

सती
अनंगसरा

धर्म के श्रद्धानी होकर,
भाग्य भरोसा ना छोड़ा।
कोड़ी पति जु दिया पिता ने,
किंचित दोष भी न दीना।।

सती
मैनासुन्दरी

आठ वर्ष की आयु में,
पितु ने ब्रह्मचर्य दिला दिया।
अनेक उपसर्गों में भी ,
ब्रह्मचर्य को ना छोड़ा।।

सती अनंतमती

जय जिनेन्द्र